RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 अक्टूबर 2022

बाल विज्ञान पत्रिका, अक्टूबर 2022

चकमक

मूल्य ₹50

1

मेरा पन्ना विशेषांक

नवम्बर-दिसम्बर 2022

तुम जानते ही हो कि चकमक का नवम्बर अंक विशेषांक होता है। इस बार विशेषांक के साथ यह नवम्बर और दिसम्बर माह का संयुक्त अंक भी होगा। यानी इस अंक में तुम्हारी रचनाओं के ढेर सारे पन्ने होंगे। तो इस अंक के लिए तुम्हें खास तौर से अपनी रचनाएँ भेजनी हैं।

अपनी खुद की रची कहानी, कविताओं, किस्सों, लेखों, चित्रों, पेंटिंग व कॉमिक के साथ-साथ तुम चुटकुले, माथापच्ची के लिए पहेलियाँ व सवाल वगैरह भी भेज सकते हो। इनके अलावा तुम दिए गए किसी भी विषय पर अपनी रचना गढ़ सकते हो।

किस्से-कहानियों-कविताओं या चित्र अथवा कॉमिक के रूप में तुम्हारी रचनाओं के लिए कुछ विषय ये रहे

- घर-आँगन, बगीचे, रास्ते, जंगल के इर्द-गिर्द या और कहीं भी किसी जंगली जानवर से तुम्हारी मुलाकात का किस्सा
- किसी जगह घूमने गए हो तो उस यात्रा के तुम्हारे अनुभव
- हाल ही में हुए कॉमनवेल्थ गेम्स, अपने पसन्दीदा खेल या अपने गली-मोहल्ले में खेले जाने वाले किसी खेल के बारे में
- कोई ऐसी चीज़ या घटना जिसकी तुमने जासूसी की हो और उसके राज का पर्दाफाश किया हो
- अपने सपनों के घर का चित्र बनाओ।

रचना के साथ अपना नाम, कक्षा या उम्र व अपना पता ज़रूर लिखना। रचनाएँ भेजने की अन्तिम तारीख 15 अक्टूबर है। तो, जल्दी करो...

रचनाएँ तुम 9753011077 पर व्हॉट्सऐप कर सकते हो या फिर merapanna.chakmak@eklavya.in पर ईमेल भी कर सकते हो।

अंक 433 ● अक्टूबर 2022

चकमक

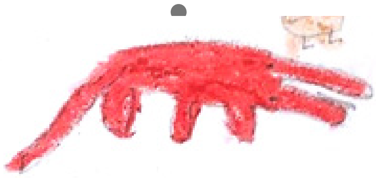

इस बार

यहाँ थी वह नदी - मंगलेश डबराल	4
जुदाई - रोशनी	6
अन्तर ढूँढो	9
क्यों-क्यों	10
भारत में अफ्रीकी चीते - विनता विश्वनाथन	14
दो पत्र - धूप में रज़ाई... - शिवकुमार गांधी	16
भागो मत, सिर्फ देखो - आलोका कान्हेरे	20
भूलभुलैया	26
पहाड़ के बुलाने पर, सड़क की... - निधि सक्सेना	27
मेरा पन्ना	32
माथापच्ची	38
चित्रपहेली	40
तुम भी जानो	43
ऐवोसेट और आइबिस - रोहन चक्रवर्ती	44

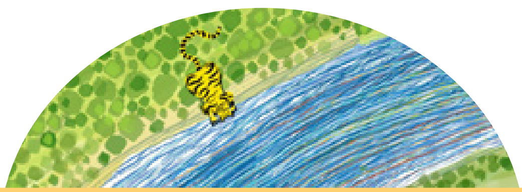

सम्पादक
विनता विश्वनाथन

सह सम्पादक
कविता तिवारी

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी
उमा सुधीर

वितरण
झनक राम साहू

डिज़ाइन
कनक शशि

डिज़ाइन सहयोग
इशिता देबनाथ बिस्वास

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

एक प्रति : ₹ 50

सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

आवरण: विष्णु करटामी, कोडरीकोसुम, सुकमा, छत्तीसगढ़

इस चित्र के बारे में पृष्ठ 25 पर पढ़ें।

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।
एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर - 10107770248
IFSC कोड - SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी
accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

एकलव्य
फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

यहाँ थी वह नदी

मंगलेश डबराल

चित्र: तविशा सिंह

जल्दी से वह पहुँचना चाहती थी
उस जगह जहाँ एक आदमी
उसके पानी में नहाने जा रहा था
एक नाव
लोगों का इन्तज़ार कर रही थी
और पक्षियों की कतार
आ रही थी पानी की खोज में

बचपन की उस नदी में
हम अपने चेहरे देखते थे हिलते हुए
उसके किनारे थे हमारे घर
हमेशा उफनती
अपने तटों और पत्थरों को प्यार करती
उस नदी से शुरू होते थे दिन
उसकी आवाज़
तमाम खिड़कियों पर सुनाई देती थी
लहरें दरवाज़ों को थपथपाती थीं
बुलाती हुईं लगातार

हमें याद है
यहाँ थी वह नदी इसी रेत में
जहाँ हमारे चेहरे हिलते थे
यहाँ थी वह नाव इन्तज़ार करती हुई

अब वहाँ कुछ नहीं है
सिर्फ रात को जब लोग नींद में होते हैं
कभी-कभी एक आवाज़ सुनाई देती है रेत से

आज सुबह का समय मेरे लिए सबसे अलग है। मेरी बहन चाँदनी मुझसे दूर जानेवाली है। वह और मैं दोनों ही उदास हैं। चाँदनी मामा के साथ रहती है। वह हम से मिलने आई थी। लॉकडाउन लग जाने की वजह से वह वापिस जा नहीं पाई। वह तो अच्छा था मामा लौट गए थे। हम दोनों बहुत प्यार-से रहते थे।

मम्मी जब काम करने चली जाती थीं तो चाँदनी सबका खयाल रखती थी। चाँदनी घर का सारा काम करती थी। उसके आ जाने से मुझे काम नहीं करना पड़ता था। मम्मी खाना बनातीं। हम चारों भाई-बहन एक साथ खाना खाते।

मम्मी पहले एलईडी वाले बल्ब बनानेवाली कम्पनी में काम करती थीं। वह सुबह जल्दी जाती थीं। देर शाम घर आती थीं। कोरोना की वजह से काम छूट गया था। रही बात पापा की, तो वह कभी लगकर काम नहीं करते। उन्हें तो बस वाटिकाओं में होनेवाली शादियों में काम करने का मन करता है। कोरोनावायरस की वजह से शादियों पर सबसे ज़्यादा असर पड़ा। इसकी वजह से बैंकेट हॉल

जुदाई

रोशनी

चित्र: पूजा के मेनन

और वाटिकाएँ सूनी पड़ी रहीं। अगर बीच में कोई शादी हुई तो संख्या कम होने के कारण पापा को वह लोग बुलाए नहीं। कुल मिलाकर घर में तंगी का माहौल था। पापा को ढेर सारा टेंशन था। काम पर जाने का, खर्चे का भी – उसमें कोई कटौती नहीं हो सकती थी। जैसे-तैसे दिन कट रहे थे। अनलॉक शुरू हुआ तो मामाजी आए।

चाँदनी मामा के साथ जाने के लिए तैयार हो गई। पापा ने भी हाँ कर दी। चाँदनी को तैयार होता देख मुझे टेंशन हो रही थी कि अब घर का सारा काम मुझे करना पड़ेगा। मैं मम्मी के पास गई और कहा तुम काम करने जाने लगोगी, तब दीदी को भेजना। मम्मी ने कहा, "उसकी पढ़ाई बर्बाद हो रही है। वह वहीं मामा के पास ही पढ़ेगी। अब तो वह आठवीं में जानेवाली है। और तुम यहीं पढ़ोगी सातवीं में।" सारी बात सुनकर मैंने कहा, "तुम काम पर जाओगी तो मैं भी घर का सारा काम नहीं करूँगी।"

मम्मी ने उन दोनों के रास्ते के लिए भूँजा तैयार किया। मामाजी और चाँदनी दोनों तैयार होकर चल दिए। हम उन्हें छोड़ने सावदा बस स्टैंड तक गए। चाँदनी का सुन्दर-सा चेहरा मास्क में छुप गया था। बस उसके लम्बे, काले बालवाली चुटिया कुछ दूर तक दिख रही थी। वह बस में खिड़की की तरफ अपने बैग को रखकर बैठी थी। शिवम और आदित्य ने उसे बाए किया।

शिवम पाँचवीं में पढ़ता है और आदित्य तीसरी में। कोरोना की वजह से पढ़ाई समझ में नहीं आई थी, फिर भी सभी अगली क्लास में प्रमोट हो गए थे।

हम तीनों की वजह से मम्मी ने अभी काम नहीं पकड़ा है। पापा उन्हीं वाटिका में जाने लगे हैं। कभी काम मिल जाता है, कभी नहीं भी होता है। जिस दिन शादी होती है उस दिन तो हम सबके मज़े हो जाते हैं। मेरे पापा खूब खाना ले आते हैं। कभी-कभी तो हम लोग पूरा खाना खा भी नहीं पाते हैं।

अभी हमारे स्कूल से सभी बच्चों को राशन किट मिला है, इस वजह से खाने-पीने की कमी नहीं है। लेकिन पैसे की कमी तो है। जिसकी वजह से चाँदनी हमें छोड़कर मामा के साथ रहती है। हमें उसकी बहुत याद आती है। वह कभी-कभी हमारे पास फोन करती है। मैं तो उससे बात ही नहीं करती।

एक दिन उसका फोन आया। फोन मैंने ही उठाया था। वह हँस रही थी। मैंने उसे बोला, "तू मज़े में है। यहाँ न पापा का काम चल रहा है और न मम्मी काम पर जा पा रही हैं। इस बात को लेकर मम्मी-पापा में हर दूसरे-तीसरे दिन खटपट होती रहती है। इस वजह से मम्मी उदास हो जाती हैं। वह भी काम खोज रही हैं। जिस दिन काम मिल जाएगा वह भी जाने लगेंगी। समझ लो घर का काम मुझे ही करना पड़ेगा। वह तो अभी उन्हें काम नहीं मिल रहा है, और मिल भी रहा है तो दूर का मिल रहा है। दूरी की वजह से पापा नहीं जाने देते। पापा का ही काम अब कभी-कभी आने लगा है। मैं अच्छा खाना भी तो नहीं बना पाती हूँ।"

चाँदनी ने उधर से कहा, "कोई बात नहीं। धीरे-धीरे सीख जाएगी।" यह कहते हुए मम्मी के बारे में पूछकर उसने फोन काट दिया।

रोशनी, सर्वोदय कन्या विद्यालय, सावदा घेवरा कॉलोनी, दिल्ली में आठवीं कक्षा की छात्रा है। वह अंकुर क्लब की नियमित रियाज़कर्ता हैं। यह उनकी किसी भी पत्रिका में छपने वाली पहली कहानी है।

अन्तर ढूँढो

चित्र: अमृता

इन दो चित्रों में दस से ज़्यादा अन्तर हैं। तुमने कितने ढूँढे?

क्यों क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था—

तुम्हें क्या लगता है — क्या विलुप्त जानवरों को फिर से स्थापित करने की कोशिश करनी चाहिए, और क्यों या क्यों नहीं?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो। तुम्हारा मन करे तो तुम भी हमें अपने जवाब लिख भेजना।

मेरे खयाल से तो विलुप्त जानवरों को नहीं लाना चाहिए क्योंकि ज़रूरी नहीं कि वो हमें नुकसान नहीं पहुँचाएँगे और जंगली जानवर अपनी सुरक्षा के लिए हम पर वार कर सकते हैं। कहते हैं कि जंगली चीता किसी को भी नुकसान नहीं पहुँचाता लेकिन वह अपनी सुरक्षा के लिए वार करेंगे। इसलिए विलुप्त जानवरों को नहीं लाना चाहिए।

गौरव कारपेंटर, छठवीं, कैम्ब्रिज हायर सैकेंडरी स्कूल, देवास

चित्र: गुलप्सा, नींव समूह, स्वतंत्र तालीम, रमद्वारी सेंटर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

अगले अंक के लिए सवाल है— कभी-कभी अपनी जाति या गरीबी/रईसी के चलते लोग हमारे साथ अलग-अलग तरह से बर्ताव करते हैं। ऐसे अनुभव कभी अच्छे होते हैं, तो कभी बुरे। ऐसे बर्ताव का यदि तुम्हारा कोई अनुभव है तो वह क्या है और तुम्हें क्या लगता है कि ऐसा बर्ताव तुम्हारे साथ क्यों किया गया होगा?

अपने जवाब तुम हमें लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर भेज सकते हो।

जवाब तुम हमें chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

चकमक

एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास, भोपाल - 462026 मध्य प्रदेश

हाँ विलुप्त जानवरों को फिर से स्थापित करना चाहिए, क्योंकि वे भी किसी ना किसी प्रकार से हमारे ईकोसिस्टम पर प्रभाव डालेंगे। वे हमारे पर्यावरण में उपस्थित जानवरों के साथ पर्यावरण को सन्तुलित करेंगे। इसीलिए हमारे तर्क के आधार पर विलुप्त जानवरों को दोबारा स्थापित करना चाहिए।

अदिति राणा, ग्यारहवीं, राजीव गांधी नवोदय विद्यालय, खटीमा, ऊधमसिंह नगर

उनको इसलिए लाना चाहिए क्योंकि उनकी प्रजाति खतम हो गई है। उनको इसलिए लाना चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ी को पता चले कि चीता नाम की भी प्रजाति होती है।

पीयूष प्रजापत, आठवीं, देवास, मध्य प्रदेश

मुझे लगता है कि विलुप्त जानवरों को फिर से स्थापित करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए क्योंकि जो विलुप्त जानवर हैं वे तो विलुप्त हो चुके हैं तो हम उन्हें कहाँ से ढूँढकर लाएँगे? दूसरा कारण यह है कि अगर हम विलुप्त जानवरों को वापिस स्थापित करने की कोशिश करेंगे तो मनुष्य फिर से अपने मुनाफे के लिए जानवरों का फायदा उठाएँगे। हम तो जानते हैं कि मनुष्य लालची प्रकृति के हैं। वापिस ले भी आए तो वे मनुष्य के कारण फिर विलुप्त हो जाएँगे। इससे तो अच्छा है कि हम विलुप्त जानवरों को फिर से स्थापित करने की कोशिश नहीं करें।

कुमकुम निषाद, दसवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, शंकरदाह, धमतरी, छत्तीसगढ़

हमें लगता है कि विलुप्त जानवरों को फिर से स्थापित नहीं करना चाहिए क्योंकि ये जानवर देखने में बहुत विशाल और कितने खतरनाक होते हैं। अगर इन जानवरों को फिर से स्थापित करने की कोशिश करेंगे तो ये बाकी सभी जानवरों को मारकर खा जाएँगे और पृथ्वी पर तबाही मचा देंगे। और जब जानवर नहीं बचेंगे तो भूख से इन्सानों को खाने लगेंगे। तो इन्हें फिर से स्थापित नहीं करना चाहिए। ये पृथ्वी के लिए खतरा हैं।

आएशा बानो, दसवीं, सीख समूह, स्वतंत्र तालीम, रमद्वारी सेंटर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

हमें विलुप्त जानवरों को फिर से स्थापित करना चाहिए। क्योंकि अगली पीढ़ी को दिखाना है कि हमारे यहाँ के विलुप्त जानवर कैसे होते हैं। मैं कुछ उदाहरण बताना चाहता हूँ, जैसे उड़ती गिलहरी, चीता, शेर।

अरुणाभ रावल, तीसरी, प्रतापगढ़, राजस्थान

इस पृथ्वी पर सबसे खतरनाक प्रजाति यदि कोई है, तो शायद वह मनुष्य ही है। पृथ्वी को बर्बाद करने में सबसे अधिक योगदान इसी का है। वन्य क्षेत्र में मानव की गतिविधियाँ, आवासीय बस्तियाँ, अवैध खनन के अलावा शिकार भी हो रहा है। इसलिए हमें जानवरों की उनकी भूमि पुन: लौटानी चाहिए।

अरमान गोसर, छठवीं, देवास, मध्य प्रदेश

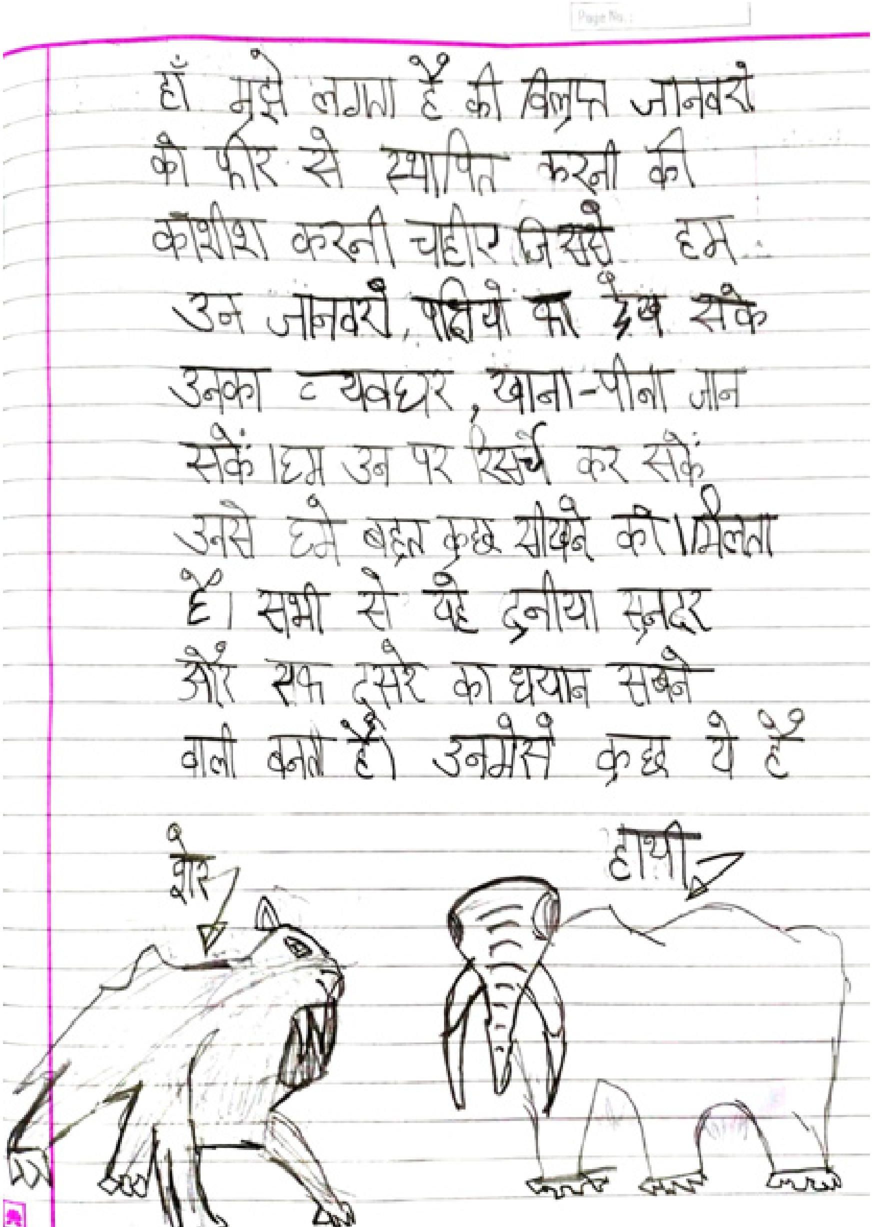
Page No.

हाँ मुझे लगता है की विलुप्त जानवरों को फिर से स्थापित करनी की कोशिश करनी चाहिए जिससे हम उन जानवरों, पक्षियों को देख सके उनका व्यवहार, खाना-पीना जान सकें। हम उन पर रिसर्च कर सकें उनसे हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। सभी से यह दुनीया सुन्दर और एक दूसरे का ध्यान रखने वाली बनती है उनमेंसे कुछ ये है

चित्र: सऐश गुप्ता, तीसरी, हेरिटेज स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

विलुप्त जानवरों को हमें फिर से स्थापित करने की कोशिश करनी चाहिए। क्योंकि वे भी जीव-जन्तु हैं। जितना हक हमको जीने का है, उतना हक जानवरों को भी मिलना चाहिए। हमें जानवरों से उनका हक नहीं छीनना चाहिए। भगवान ने पूरी दुनिया बनाई है और उस दुनिया में अलग-अलग पशु-पक्षी, जीव-जन्तु अनेक जानवर हैं जिन्हें हम कैद करके रखते हैं जैसे कि कुत्ते, बिल्ली, तोता। हम सब को मिलकर विलुप्त जानवरों को वापिस लाना चाहिए। और उनका हक देना चाहिए।

रिशिका वर्मा, नौवीं, देवास, मध्य प्रदेश

चित्र: मोहम्मद वैस, पाँचवीं, नींव समूह, स्वतंत्र तालीम, रमद्वारी सेंटर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

हमें लगता है विलुप्त जानवरों में से कुछ जानवर लाने चाहिए, कुछ नहीं। इसलिए कि कुछ जानवर हमारे फायदे के लिए होते हैं। चीता जब हिरण को खा लेता था तो इतनी फसल बेकार नहीं होती थी। अब चीते के विलुप्त होने पर फसलों को हिरण बहुत नुकसान पहुँचाते हैं। तो चीतों को वापस लाना चाहिए और 25 साल पहले वाले जानवर बहुत खतरनाक थे इसलिए उनको नहीं लाना चाहिए।

राबिया, आठवीं, सीख समूह, स्वतंत्र तालीम, रमद्वारी सेंटर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

मुझे लगता है कि विलुप्त जानवरों को पुनः स्थापित करने की ज़रुरत नहीं है क्योंकि उनका विलुप्त होना कहीं न कहीं अन्य जीवों के लिए लाभदायक सिद्ध हुआ है। जैसे कि डायनासौर, 2000 से 600 लाख वर्ष पूर्व इन्हीं का राज था जिसके कारण अन्य जीव विकास नहीं कर पा रहे थे। प्राकृतिक चयन की प्रक्रिया अथवा प्राकृतिक आपदा, परस्पर द्वन्द्व व लड़ाई के कारण इनका विनाश हो गया। डायनासौर की विलुप्ति से ही हम जैसे जीव विकास कर पाए।

जैसा कि डार्विन और वैलेस द्वारा प्रतिपादित विकास के सिद्धान्त से हमें पता चलता है कि प्रजातियों की आबादी प्रभावित होती है। अधिक सक्षम प्रजतियों की आबादी अन्य प्रजातियों की आबादी का स्थान ले लेती है। प्रजातियों की आबादी में क्रमशः बदलाव होता रहता है और अगर विलुप्त हो चुकी प्रजातियों को वापिस लाया जाए, तो वह अन्य प्रजातियों का स्थान ले लेंगी और हमें प्रभावित करेंगी।

आरज़ू बारसे, दसवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

भारत में अफ्रीकी चीते

विनता विश्वनाथन

1950 के दशक में देश के आखिरी चीते का शिकार हुआ। कुछ समय से कई लोगों की इच्छा रही है कि जिस चीते को हमने शिकार करके देश से विलुप्त किया वो हमारे जंगलों में दोबारा घूमे। दुनिया में कई बार विलुप्त जानवरों को किसी इलाके में दोबारा बसाने की कोशिशें हुई हैं। इनमें से कुछ कोशिशें सफल रही हैं और कुछ नाकाम।

इसका एक सफल उदाहरण अमेरिका में देखने को मिलता है। काफी समय से विलुप्त माने गए ब्लैक फुटैड फेरेट (नेवले जैसे दिखने वाले) 1981 में एक खेत में पाए गए। शोधकर्ता उनको प्रजनन केन्द्र ले आए और उनकी संख्या बढ़ने पर उनमें से कुछ को वापिस जंगली इलाकों में छोड़ दिया। कई मुश्किलों के बाद आज उनकी आबादी लगभग 300 की है। यूरोप में यूरेशइयन लिंक्स नामक बिल्ली अठारहवीं सदी से विलुप्त थी। प्रजनन केन्द्रों में से यूरोप के 7 देशों के जंगलों में इनको दोबारा बसाया गया है। लेकिन ये छोटी आबादियाँ एक-दूसरे से मिल-जुल नहीं पाती हैं, जो इन बिल्लियों की आबादी को लम्बे समय तक सुरक्षित रहने के लिए ज़रूरी है। इनके अलावा भी जानवरों की कई किस्मों के कुछ सदस्यों को किसी अन्य जंगल या प्रजनन केन्द्र से लाकर उन इलाकों में बसाया गया है जहाँ पर वे विलुप्त हो गए थे। चीते को भारत में लाना भी ऐसे ही प्रयासों में से एक है।

ब्लैक फुटैड फेरेट

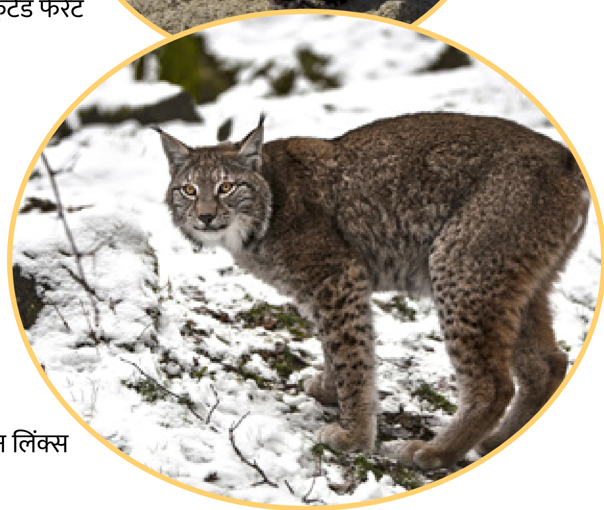

यूरेशइयन लिंक्स

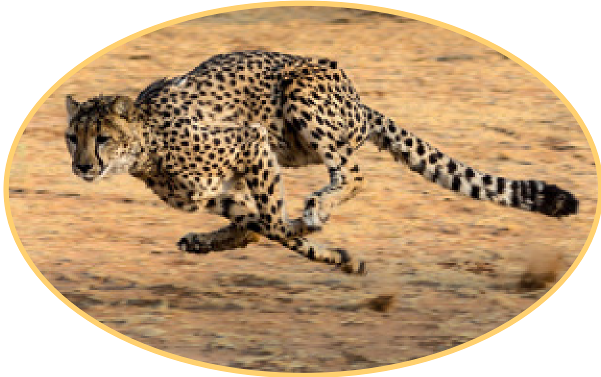

दूसरी बात, चीते को वापिस लाने का एक महत्वपूर्ण कारण है हमारे सवाना जंगलों को बचाना। ये ऐसे घास के मैदान हैं जिनमें कमोबेश पेड़ उगते हैं। लेकिन चीते को तो एक सुरक्षित राष्ट्रीय उद्यान में लाया गया है – इसे बचाने की ज़रूरत नहीं है। हमारे देश में घने हरे-भरे जंगलों के अलावा बाकी किस्म के जंगल अक्सर बंजर घोषित किए जाते हैं। ये शेर-चीता के प्राकृतवास होते हैं। इन्हें बचाने का तो कोई इन्तज़ाम नहीं हो रहा है।

एक और मुख्य बात लोगों के सन्दर्भ में है – कूनो के आसपास रहनेवाले लोग क्या सोचते हैं। कुछ लोगों को लगता है कि चीते के उनके इलाके में आने से पर्यटकों की संख्या बढ़ेगी। इससे होटल बनेंगे और उनको रोज़गार मिलेगा। कुछ नहीं चाहते कि तेन्दुए, ढोल, रीछ, भेड़ियों के साथ-साथ एक और परभक्षी उनके इलाके में लाया जाए। राष्ट्रीय उद्यान बनने से कई गाँव भी यहाँ से हटा दिए गए हैं। तो समझ में नहीं आता है कि स्थाई लोगों के लिए चीतों का आना कितना फायदेमन्द होगा।

वैसे तो चीते को दोबारा भारत में लाने से किसी को आपत्ति नहीं। लेकिन जिस तरह से यह सब किया जा रहा है इससे लोगों को कुछ दिक्कतें हैं। पहली बात कि जिस चीते को कूनो में लाया गया है वो अफ्रीकी चीता है। यह चीते की वो किस्म नहीं है जो भारत में पाई जाती थी। चीते को जहाँ लाया जा रहा है वो जगह कुछ दशकों पहले शेर के लिए तैयार की गई थी। लेकिन पर्यटकों से मुनाफा कम होने के खतरे के कारण गुजरात सरकार ने मध्य प्रदेश में शेर भेजने से मना कर दिया।

और सबसे बड़ी बात तो ये है कि ऐसी कोशिशों की सफलता में दशकों लग जाते हैं। करोड़ों-अरबों का खर्चा होता है। हमारे देश में वन्यजीव बचाने के लिए बहुत पैसे नहीं होते हैं। ऐसे में शायद हमें उन जानवरों को बचाने का सोचना चाहिए जो विलुप्त होने जा रहे हैं और जिन्हें बचाने की सम्भावना अभी है।

इनके अलावा भी कई कारण हैं कि इस तरह की कोशिशें नाकाम होती हैं। खैर, चीते तो आ गए हैं। देखते हैं आगे क्या होता है। कभी चीता देखकर आओ तो हमें ज़रूर लिख भेजना।

दो पत्र

धूप में रजाई के पीले फूल और जूते...

शिवकुमार गांधी

प्यारे दोस्त शिबू,

आज यहाँ बादल कम हैं, पर हवा तेज़ चल रही है। धूप है।

कल मैंने मुर्गी के बच्चे देखे। स्कूल जाते-जाते रस्ते में मेरे जूते का फीता खुल गया था। उन्हें बाँधने मैं रस्ते में बैठी थी, वहीं मुर्गी के बच्चे देखे। मुझे देखकर अच्छा लगा। ऐसा लगा जैसे एक मुझ बच्चे ने दूसरे बच्चों को देखा। उन्होंने भी मुझे देखा, ऐसा लगा। तो फिर उन बच्चों ने एक मुझ बच्चे को देखा। यानी कि बच्चों ने आपस में एक-दूसरों को देखा। उन्होंने तो मुझे जूते और स्कूल बैग के साथ देखा, मैंने तो उन्हें ऐसे ही नंगे-पुंगे देखा।

शिबू तुमने जब कभी मुर्गी के बच्चों को देखा होगा तब तुम क्या जूते के फीते बाँध रहे थे या क्या कर रहे थे?

परसों मैंने एक नाव बनाई थी। एक बड़े पत्ते से।

स्कूल की घण्टी बहुत तेज़ बजती है।

स्कूल में घण्टी नहीं बजनी चाहिए। बच्चों और टीचर को अपने आप समझ जाना चाहिए कि अब छुटटी का टाइम हो गया है।

आज मैंने सप्ताह भर के लिए गज्जू से कुट्टी कर ली। उसने मेरे साथ झगड़ा किया था।

गज्जू कुट्टी नहीं कर रहा था। पर मैंने कहा, "नहीं, अब तो कुट्टी ही सही बात है।"

मैं यहाँ ठीक हूँ, तुम भी ठीक हो। मतलब कि ठीक होगे।

मैं जिस पेंसिल से यह चिट्ठी लिख रही हूँ वो नीली है। चिट्ठी के साथ में अपनी रफ कॉपी का एक पन्ना भी भेजूँगी जिसमें मैंने तुम्हारा चित्र बनाया है। और उसमें तुम्हारी

दाढ़ी पर मैंने एक डिज़ाइन भी बनाया है। डिज़ाइन मतलब कि मैंने सजाया है। बुरा मत मानना। अच्छा मानना।

आज गिन्नी का जन्मदिन था, उसने स्कूल में सबको बताया। टीचर ने गिन्नी से पूछा, “कितने साल की हो गई हो?” गिन्नी ने कहा, “बस दस।” गिन्नी ने नई रिबन पहनी हुई थी। गज्जू ने उसे चिढ़ाया, जिससे कि मैं उससे कुट्टी हूँ। गिन्नी ने कहा कि उसे जन्मदिन पर नए जूते चाहिए थे, पर उसकी अम्मी ने मना कर दिया। गिन्नी थोड़ा उदास भी थी। उसे देखकर मुझे भी अच्छा नहीं लगा। पर फिर मुर्गी के बच्चों के पैर याद आए।

जब मैं स्कूल से वापस आ रही थी तब वहाँ मुर्गी के बच्चे नहीं दिखे, दिखते तो अच्छा होता। पर इतना बुरा भी नहीं था।

तुम एक ऐसा फोटो खींचना जिसमें कभी मैं अपने जूतों के फीते बाँध रही होऊँगी और पास से मुर्गी के बच्चे जाते हुए दिख रहे होंगे। मज़ा आएगा। वैसे तुमने कोई नया फोटो खींचा क्या? मुझे भेजना। शिबू, तुम सुबह उठते ही जो पहली चीज़ देखो मुझे उसका फोटो भी भेजना। या फिर धूप में जाओ तब जो पहली चीज़ देखो उसका फोटो भेजना, या किसी चिड़िया की आवाज़ सुनकर जो पहली चीज़ देखो उसका फोटो मुझे भेजना। अपनी डायरी में लगाऊँगी।

मैंने कुछ दिन पहले सुबह उठते ही अपनी रज़ाई पर फूल देखा था – पीले रंग का। अब उसे रोज़ देखती हूँ। बादल होते हैं तो कम पीला दिखता है। और धूप होती है तो बिलकुल पूरा पीला, और ज़्यादा पीला।

बस।

लीनी।

प्यारी दोस्त लीनी,

अन्त में तुम्हारे लिखे ‘बस’ से याद आया कि मैंने कुछ दिन पहले बस में बैठकर जाते हुए एक टैम्पो के पीछे लिखा हुआ देखा था–

“मैं बड़ा होकर ट्रक बनूँगा”। है ना मस्त।

एक और देखो, पढ़ो।

“पहाड़ों में पानी का दरिया है

मैदानों में घास क्या बढ़िया है।”

और इसको पढ़कर तो मैंने भी दो लाइन बनाईं। पढ़ो।

“मैदानों में हरा रंग क्या बढ़िया है

क्योंकि पहाड़ों में चमकता दरिया है।”

हाँ हो सकता है कि बहुत कमाल की लाइन मैंने नहीं बनाई हों, पर बात कुछ ठीक लग रही है।

अगर पढ़कर तुम्हें हँसी आ रही हो तो अगले पत्र में तुम जितनी देर हँसी हो उतनी ही बार

हँसी हँसी हँसी

हँसी हँसी हँसी हँसी हँसी लिखते रहना।

वैसे अच्छा हुआ कि मैंने हँसाने वाली बात लिखी। वैसे इतनी बुरी भी नहीं थी। और झूठी भी नहीं।

तुम जब गज्जू से कुट्टी खतम करके अब्बा कर लो तब उससे पूछना कि कुट्टी के सप्ताह भर वाले टाइम में उसने क्या किया? पतंग उड़ाई कि नहीं?

मुझे याद नहीं जब मैंने मुर्गी के बच्चे देखे तब मैं क्या कर रहा था। अगर किताब में देखे होंगे तो मैं किताब पढ़ रहा होऊँगा।

मैंने तुम्हारे लिए एक लट्टू बनाया है। बस उस पर नोंक लगानी बाकी है। उसके सिर पर लाल और नीला रंग लगाया है। अपन मिलेंगे तब चलाएँगे। उसके लिए रस्सी खरीदनी बाकी है – लाल, नीली, हरी।

कल मैंने एक बहुत उदास आदमी देखा। वो मन्दिर की दीवार के सहारे बैठा था। वो झील पार डूबते सूरज को ही देखता जाता था और मैं उसे।

गिन्नी की उदासी अब कम हो गई होगी या बढ़ गई? पीले रिबन में वो खुश नहीं दिखती क्या? रिबन आया है जूते भी आएँगे।

वैसे हाँ, नए रिबन को नए जूते तो नहीं समझा जा सकता।

तुम्हारी रज़ाई पर पीले फूल को देखने वाली बात से मुझे अच्छा लगा। मुझे कढ़ाई करना सीखना है। जब सीखूँगा तब अपनी रज़ाई पर भी पीला फूल काढूँगा।

और जब मैं वहाँ आऊँगा, सुबह उठते ही यह देखूँगा कि तुम उठते ही रज़ाई के पीले फूल को देख रही हो, तब मैं तुम्हारा और पीले फूल का और धूप, सबका फोटो लूँगा।

आज तो मैंने धूप में कुछ परछाइयों की फोटो ली है। मुझे दरिया में बादल की परछाईं की भी फोटो लेनी है। तुम चाहो तो उस फोटो को अपने स्कूल में लगाना। नहीं तो गिन्नी को भी दे सकती हो।

तुमने जो मेरी दाढ़ी की सजावट वाला चित्र भेजा था वो मैंने रसोई में दीवार पर चिपका दिया है। तुम मुझे गुदगुदी कर रही हो ऐसा लग रहा है, तभी तो चेहरे पर ऐसी हँसी भी दिख रही है।

यह चित्र देखकर मेरी उदासी भी थोड़ी कम हो गई, क्योंकि मैं झील के पास उस आदमी को देखकर थोड़ा उदास हो गया था। क्या यह चित्र उस उदास आदमी को ढूँढकर उसे दे दूँ?

तुम मेरे लिए एक और बना सकती हो क्या? अच्छा रहने दो मैं इसी का एक फोटो खींचकर अपने पास रख लूँगा।

तुमने अन्त में ‘बस’ लिखा, तो लो, मैं लिखता हूँ ‘बस की खिड़की’।

शिबू

भागो मत, सिर्फ देखो....

आलोका कान्हेरे
अनुवाद: कविता तिवारी; चित्र: मधुश्री

सायरा और मिहिर **संख्याओं को** भाग देने के बारे में बात कर रहे थे।

सायरा: कोई भी संख्या लो और उसका आखिरी अंक देखो। यदि आखिरी अंक 0, 2, 4, 6 और 8 हो तो वो संख्या 2 से विभाजित होती है।

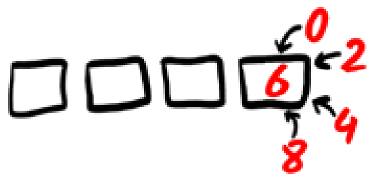

मैं एक उदाहरण के ज़रिए तुझे बताती हूँ। मान ले कि तूने संख्या 36 ली। इसका आखिरी अंक 6 है। और 36 में 2 से भाग देने पर 18 उत्तर आता है।

मिहिर: लेकिन 36 तो बहुत छोटी संख्या है। किसी बड़ी-सी संख्या के लिए इसे आज़माकर देखते हैं, जैसे कि...

सायरा: इस संख्या का आखिरी अंक 2 है। तो इस तरकीब के अनुसार यह संख्या 2 से विभाजित होनी चाहिए।

मिहिर: क्यों ना हम यह पता करने की कोशिश करें कि यह तरकीब हर संख्या के लिए क्यों काम करती है?

सायरा: हाँ, बिलकुल। चल कोशिश करते हैं।

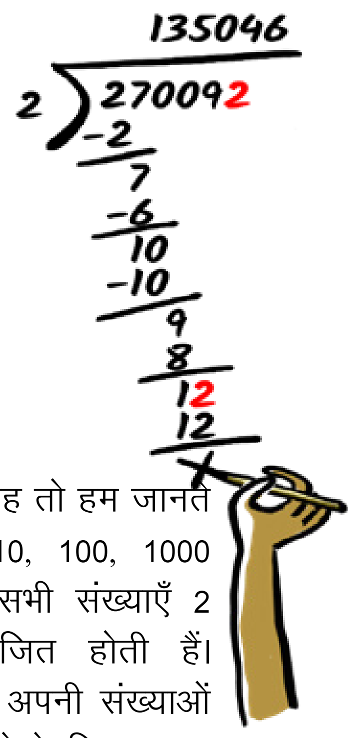

मिहिर: यह तो हम जानते हैं कि 10, 100, 1000 इत्यादि सभी संख्याएँ 2 से विभाजित होती हैं। और हम अपनी संख्याओं को लिखने के लिए इनका इस्तेमाल करते हैं।

सायरा: मुझे तेरी बात ठीक-से समझ नहीं आई।

मिहिर: मेरा मतलब है कि यदि तुम किसी भी संख्या, मान लो कि

को देखो तो हम जानते हैं कि

1234 = 1 x 1000 + 2 x 100 + 3 x 10 + 4 x 1

सायरा: ओह! ऐसे... मैं समझ गई। तेरी बात एकदम ठीक है। और यदि संख्या 1000, 2 से विभाजित होती है तो 2000 भी 2 से विभाजित होगी।

मिहिर: हाँ, बिलकुल। यह 100 या 1000 या 10000 इत्यादि के किसी भी गुणज (multiple) को विभाजित करेगा।

सायरा: चल, एक बार फिर से संख्या को देखते हैं।

1234 = 1 x 1000 + 2 x 100 + 3 x 10 + 4 x 1

हम जानते हैं कि

1234 = 1 x 1000 + 2 x 100 + 3 x 10 + 4 x 1

2 से विभाजित होंगे। ?

तो, 2 से विभाज्यता की जाँच के लिए हमें केवल इकाई (unit place) के स्थान का अंक देखने की ज़रूरत है। हमें बस यह देखने की ज़रूरत है कि वो अंक 2 से विभाजित होता है, या नहीं।

मिहिर: और इकाई के स्थान का अंक मतलब संख्या का आखिरी अंक, है ना? और आखिरी अंक 2 से तभी विभाजित हो सकता है जब वह 0, 2, 4, 6 या 8 हो। वाह! हमने तो खोज लिया।

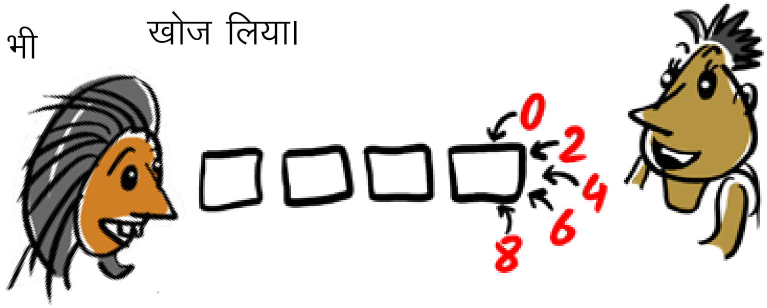

सायरा: पर यह थोड़ा आसान है, नहीं? 5 के बारे में तुझे क्या लगता है? तेरे हिसाब से 5 से विभाज्यता की तरकीब क्या होगी?

मिहिर: चल, देखते हैं। 2 की ही तरह 5 भी 10, 100, 1000, ... को विभाजित करता है। तो अभी हमने जिस तर्क की बात की थी उसके अनुसार अगर आखिरी अंक 5 हुआ तो वह संख्या 5 से विभाजित होगी।

सायरा: क्या तू यकीन से कह सकता है कि आखिरी अंक सिर्फ यही होगा?

मिहिर ने थोड़ा सोचा और फिर चिल्लाया... “0! 0! 0!”

सायरा: बिलकुल सही! तो 5 से विभाज्यता की जाँच के लिए हमें बस यह देखने की ज़रूरत है कि आखिरी अंक 5 या 0 है, या नहीं।

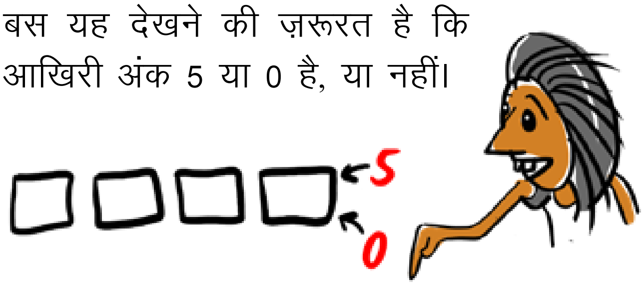

मिहिर: अब मैं 10 से विभाज्यता की तरकीब भी जान गया हूँ। आखिरी अंक 0 होना चाहिए। वाह! क्या ऐसी और भी तरकीबें हैं?

सायरा: तू बता।

मिहिर: ठीक है। मैं पता करके बताता हूँ।

कुछ दिनों बाद...

मिहिर भागता हुआ सायरा के पास आया।

मिहिर: मैंने कुछ और तरकीबें खोजी हैं।

सायरा: अच्छा, बता।

मिहिर: 9 की तरकीब तो बहुत मज़ेदार है।

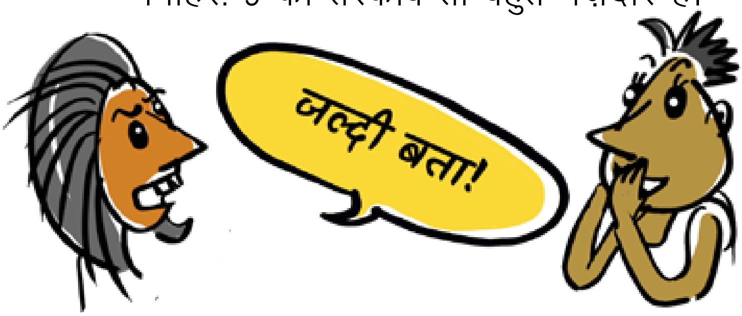

मिहिर: संख्या के सभी अंकों को जोड़ो और जाँचो कि योगफल 9 से विभाजित होता है, या नहीं। यदि योगफल विभाजित हुआ तो मूल संख्या भी 9 से विभाजित होगी।

सायरा: मैं समझी नहीं। मुझे दो उदाहरण बता, एक जो 9 से विभाजित होता हो और एक जो विभाजित न होता हो।

मिहिर: ओके। मान ले कि हम संख्या

7 1 2 8 को लेते हैं।

7+ 1 + 2 + 8 = 18, जो कि 9 से विभाजित होता है। तो मेरा कहना है कि संख्या 7128 भी 9 से विभाजित होगी।

सायरा: चल फिर 7128 को 9 से भाग देकर देखते हैं।

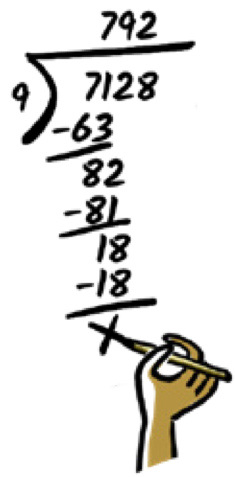

सायरा: ओके। यह तरकीब ठीक लग रही है। तो यदि अंकों का जोड़ 9 से विभाजित नहीं हुआ तो क्या मूल संख्या भी 9 से विभाजित नहीं होगी?

मिहिर: मैंने ऐसी स्थिति के बारे में नहीं सोचा। मैंने केवल उन्हीं संख्याओं पर काम किया जो 9 से विभाजित होती हैं। पर, चल अभी करके देखते हैं।

मिहिर: संख्या 6 0 3 5 लेकर देखते हैं। इसके अंकों का योग 6 + 0 + 3 + 5 = 14 हुआ, जो कि 9 से विभाजित नहीं होती है। अब भाग करके देखते हैं।

सायरा: ऐसा लगता है कि यह तरकीब काम करती है। लेकिन क्यों?

मिहिर: मैंने अपने टीचर से पूछा था। उन्होंने कोई सीधा-सीधा जवाब तो नहीं दिया, लेकिन एक हिंट ज़रूर दिया। उन्होंने कहा कि मुझे संख्या को प्रसारित रूप (expanded form) में लिखकर देखना चाहिए।

सायरा: जैसे कि 7 1 2 8 को लिख सकते हैं:

$$7128 = 7 \times 1000 + 1 \times 100 + 2 \times 10 + 8 \times 1$$

मिहिर: पर 1000 तो 9 से विभाजित नहीं होता, ना ही 100 या 10।

सायरा: एक मिनट रुक। 1000 तो 9 से विभाजित नहीं होता, लेकिन 999 तो होता है। और 99 व 9 भी।

मिहिर (थोड़ा चकराते हुए) तो?

सायरा: रुक!

$$7128 = 7 \times 1000 + 1 \times 100 + 2 \times 10 + 5 \times 1$$

$$\begin{aligned} 7128 = & (7 \times 999 + 7 \times 1) \\ & + (1 \times 99 + 1 \times 1) \\ & + (2 \times 9 + 2 \times 1) \\ & + 8 \times 1 \end{aligned}$$

सायरा: ठीक है?

मिहिर: हाँ, बिलकुल ठीक है।

$$\begin{aligned} 7128 = & (7 \times 999 + 1 \times 99 + 2 \times 9) \\ & + (7 \times 1 + 1 \times 1 + 2 \times 1 + 8 \times 1) \\ = & (7 \times 999 + 1 \times 99 + 2 \times 9) \\ & + (7 + 1 + 2 + 8) \end{aligned}$$

अब

$$\underbrace{(7 \times 999 + 1 \times 99 + 2 \times 9)} + \underbrace{(7 + 1 + 2 + 8)}$$

9 से विभाजित होंगे। ?

सायरा उत्साह से बोली, “क्योंकि 999, 99 और 9 सभी 3 से भी विभाजित होते हैं।”

मिहिर: अब जब मैं यह तरकीब जान गया हूँ, मुझे 9 के पहाड़े से मिलने वाला पैटर्न भी समझ आ गया है।

सायरा: कौन-सा पैटर्न?

9 x 1 = 9	9 x 10 = 90	(0+9=9)
9 x 2 =18	9 x 9 = 81	(1+8=9)
9 x 3 =27	9 x 8 = 72	(2+7=9)
9 x 4 =36	9 x 7 = 63	(3+6=9)
9 x 5 =45	9 x 6 = 54	(4+5=9)

मिहिर: 9 के पहाड़े में 9 x 10 तक की किसी भी संख्या के अंकों को जोड़ने पर 9 आता है, यानी कि 1+8, 2 +7, ... और ऐसा होना ही होगा क्योंकि संख्या को 9 से विभाजित होना है।

मिहिर: क्या यह तरकीब केवल 2 अंकों वाली और 4 अंकों वाली संख्याओं के लिए ही नहीं, बल्कि सभी संख्याओं के लिए काम करेगी?

सायरा: करना तो चाहिए।

मिहिर: ज़रूर करेगी। क्योंकि 10 की किसी भी घात को कुछ 9 (जैसे कि 9, 99, 999 आदि) और 1 के योगफल के रूप में लिखा जा सकता है।

सायरा: मतलब?

मिहिर: 10^n = 9 (n - 1 बार) + 1

जैसे कि 10^6 = 99999 + 1 आदि

सायरा: और हम जानते हैं कि 99999 जैसी कोई भी संख्या हमेशा 9 से विभाजित होती है। यह 11111 x 9 ही तो है।

सायरा: हाँ, मैंने 4 के लिए तरकीब खोजी है। पता है 4 की तरकीब बहुत ही मज़ेदार है।

कोई भी एक संख्या लो, मान लो कि

अब इसके आखिरी दो अंकों यानी कि 72 को देखो। अब यदि 72, 4 से विभाजित होता है तो 772 भी 4 से विभाजित होगा।

मिहिर: मुझे पता है 72, 4 से विभाजित होता है। चल 772 को भाग देकर देखते हैं।

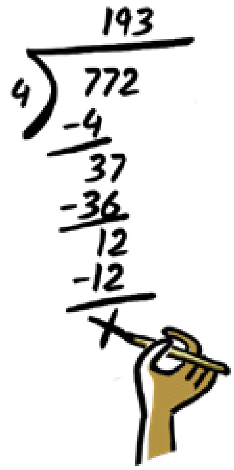

मिहिर: लगता है यह तरकीब काम करती है। क्या तूने किसी ऐसी संख्या की जाँच करके देखी है जिसके आखिरी दो अंक 4 से विभाजित ना होते हों?

सायरा: तू करके देख।

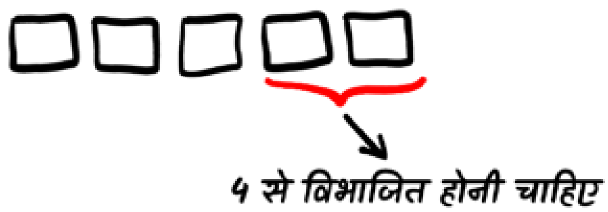

मिहिर: अच्छा। तो मैं जानता हूँ कि 62, 4 से विभाजित नहीं होता है। तो तेरी तरकीब के अनुसार 162 या 262 या... ऐसी कोई भी और संख्या जैसे कि 1462 भी 4 से विभाजित नहीं होगी।

सायरा: एकदम सही।

मिहिर: मैं 462 के लिए जाँच करके देखता हूँ।

मिहिर: लगता है तेरी तरकीब काम करती है।

मिहिर: सायरा, 2 की तरकीब में आखिरी अंक को देखना होता है और 4 की तरकीब में आखिरी दो अंकों को तो क्या 8 से विभाज्यता की जाँच के लिए आखिरी तीन अंकों को देखना होगा?

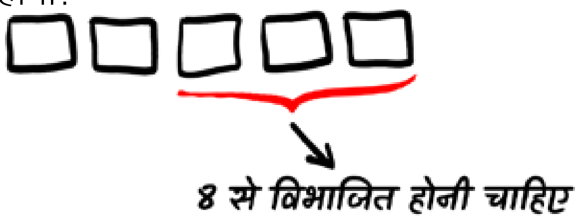

मिहिर ने अपनी इस तरकीब को कुछ संख्याओं के साथ आज़माकर देखा।

अगस्त अंक में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, झापरा, सुकमा के नवीं कक्षा में पढ़ने वाले बारसे रोशन की कहानी 'छींद रस' प्रकाशित हुई थी। कोडरीकोसुम गाँव, सुकमा के विष्णु करटामी ने छींद रस की कहानी के साथ प्रकाशित चित्र (जिसे हमने बगल में दिया है) पर अपनी कुछ टिप्पणियाँ भेजी हैं। इन्हें तुम नीचे पढ़ सकते हो। विष्णु ने इस कहानी के लिए अपना बनाया एक चित्र भी भेजा है, जिसे हमने इस अंक के कवर पर दिया है।

चाहो तो तुम भी चकमक की किसी कहानी, कविता या चित्र के बारे में अपने विचार लिखकर हमें भेज सकते हो।

विष्णु करटामी

चित्र बहुत अच्छा दिख रहा है। कलर भी बढ़िया है। लेकिन पहाड़ी एरिया जैसा लग रहा है, हमारे गाँव जैसा नहीं।

लड़के का मोकुम यानी वह पट्टी जिसे पेड़ से बाँधकर चढ़ते हैं, वह नज़र नहीं आ रहा। छींद निकालते हुए शाम हो जाती है, पर इतनी रात नहीं होती। वैसे चित्र सुन्दर बनाया है।

किताब में शामिल एक पन्ना मैं - भाग 2

निधि सक्सेना

इस छोटे सफर की लम्बी सड़क पर

22 मई, मण्डी

जागते ही कुछ अजीब-सा लग रहा है। मैं ज़िन्दा हूँ। सुरक्षित हूँ और बन्द चाय की दुकान के सामने अपने पीले स्लीपिंग बैग में सड़क के बाजू में बने पक्के बरामदे में मज़े-से जागकर ऐसे बैठी हूँ जैसे अपने बेड पर हूँ। पर थोड़ा अजीब भी लग रहा है। जब लोग सामने से घूरते हुए गुज़र रहे हैं। खैर अभी तो भीड़ नहीं है। क्या भीड़ होगी? बढ़ेगी?

तो हाँ! ये रात तो बीत गई। यात्रा की पहली रात जब मैं सोई! पहाड़ की पहली रात! और आखिर उन चायवाले भाईसाहब ने सोने को मना भी नहीं किया। कैसे करते! मैंने उन्हें डरा दिया था। जान-बूझकर नहीं!

तो, कल मैं चाय की दुकान पर टेबल पर सर रखकर कुछ देर ऊँघती रही। अँधेरा होने को था और लेटकर कमर सीधी करने की तम्मना बढ़ती जा रही थी। भैया मना भी कर चुके थे और मेरे हेड डाउन से भी ज़्यादा खुश नहीं थे। तो मैं नदी की ओर निकल गई। काफी देर बैठी रही, नदी देखी। बड़ी-बड़ी चट्टानें थीं। बिस्तर की तरह तो नहीं पर फिर भी लगभग सपाट। मैंने पहले आँख से तौला, क्या मैं इस पर आऊँगी? फिर आखिर जब और बैठा न गया तो मैं पाँव फैलाकर लेट गई।

पता नहीं कितने घण्टों बाद पीठ सीधी हुई। वो सरदार जी की मंझी के किस्से को ही चौबीस घण्टे से ज़्यादा हो गए होंगे। लेटकर इतना सुन्दर, इतना आराम मुझे पक्का ही इससे पहले कभी नहीं मिला। मैं हैरान थी कि क्या चट्टानों पर लेटना इतना सुखद, इतना आरामदायक होता है! ठण्डी-ठण्डी हवा चल रही थी। ऊपर आसमान साफ था। गाढ़े नीले में कुछ ग्रे रंग मिला जैसा। इसके बाद मुझे कुछ नहीं पता। जब मेरी आँख खुली तो सिरहाने उड़ते हुए ढेर सारे जुगनू दिखे। ये क्या है। आज के पहले मैंने बस जुगनुओं के बारे में कविताएँ पढ़ी थीं। मैं स्वर्ग में हूँ क्या? इसी को कहते हैं ना स्वर्ग! नदी की आवाज़ तेज़ हो गई थी। तारे इक्का-दुक्का ही थे। मैं फिर आसमान देखने लगी। इस बार काला, तारों सहित। मैंने सोचा मच्छर क्यूँ नहीं काट रहे। पता नहीं! खैर उसके बाद मुझे फिर कुछ याद नहीं।

उसके बाद मेरी नींद आवाज़ों से खुली। कई आवाज़ें थीं। अजीब-सी। ठीक-ठीक याद नहीं। बहुत-से लोग ऐसे कुछ चिल्ला रहे थे, "क्यों", क्या हुआ?", "कोई डूब गया क्या?" देखा कुछ लोग टॉर्च लिए नदी की ओर आ रहे हैं। मैं उठ बैठी। खड़ी हुई और देखा कि लोग मुझ पर रौशनी डालकर मेरी ही ओर आ गए। सब काफी गुस्सा थे। मैं हैरान। कुछ समझ नहीं आ रहा था क्या हुआ है। अरे! मैं तो सो रही थी। वो मुझे अपने साथ ऊपर ले गए। और समझाया कि मैं डूब सकती थी। डूबती कैसे, पानी तो बहुत दूर था। रात को वहाँ तक बढ़ आता है – जिस चट्टान पर आप थे वो डूब जाती। मैंने दूर से पानी और चट्टान का फासला देखा। अब भी बहुत था। क्या ये सच बोल रहे हैं? खैर! उन्होंने बताया कि उन लोगों ने मुझे नीचे नदी की ओर जाते देखा था, लेकिन फिर आते नहीं देखा तो डर गए कि मैं डूब गई हूँ। और एक घण्टे तक आवाज़ दी पर कोई जवाब नहीं आया तो सब इकट्ठा हो ढूँढने निकले।

मैं हैरान और इम्प्रेस दोनों थी कि इन्होंने इतना ध्यान दिया। पर क्या मैं सच में डूब जाती? क्या सच में वहाँ तक पानी आ जाता?

इस सब के बाद भैया ने अपने बरामदे में सोने को हाँ बोल दिया। जल्द ही पूरा मण्डी सुनसान हो गया। सड़कें खाली। सोचने पर डर लगा कि कुछ हो न जाए। फिर दिमाग हटाकर मैं कुछ देर टॉर्च जलाकर पढ़ने की कोशिश करने लगी। पर दिमाग भटक ही रहा था। फिर भी जल्द ही सो गई।

नई रात की उजली सुबह है

तो, अब सुबह है। समय के बारे में कुछ नहीं पता। बस उतनी सुबह है जितनी में आसमान का रंग पूरी तरह नीला भी नहीं बचा होता। और पीला, नीले में घुल तो रहा है लेकिन नीला अब भी बचा हुआ दिख रहा है। उफ्फ... ये कौन-सा तरीका है समय के बारे में बात करने का। क्या घर पर सब उठ गए होंगे। दिल्ली में तो मैं खुद ही नहीं जगती, क्या दिल्ली के आकाश में भी रंग का ये शेड मिलता है? मैं धूप में चमकता अपना हाथ देख रही हूँ! क्या मेरे हाथ का ये रंग कभी हुआ है! लगा नहीं! ये कुछ अलग सुथरा हुआ-सा पीला है।

मुझे अब भी याद नहीं वो मुझे क्या कहकर पुकार रहे थे। उन्हें तो मेरा नाम भी नहीं पता था। वो कुछ वेग-सी चिल्लाहट की आवाज़ें थीं। कोई है.... जैसी। ऐसी आवाज़ से पुकारना, सुनना दोनों अजीब था। पर वे करते क्या। मैंने वो चट्टान और नदी नहीं देखी। सो ये राज अब भी राज ही है कि उस रात मेरा क्या होता, क्या मैं सच में डूब जाती! लेकिन कितना सुन्दर था सब। क्या सच में इतना सुन्दर इतना खतरनाक हो सकता है? हाँ, ढूँढनेवालों के चेहरे देखकर तो यही लगा!! सोच रही हूँ क्या अब कभी सड़क के किनारे या चट्टान पर ऐसी बेफिक्री में सो पाऊँगी! शायद नहीं! ये बेफिक्री हिम्मतें पता भी नहीं चलता कब, कहाँ खो जाती हैं। शायद खतरनाक ही सुन्दर होता है!

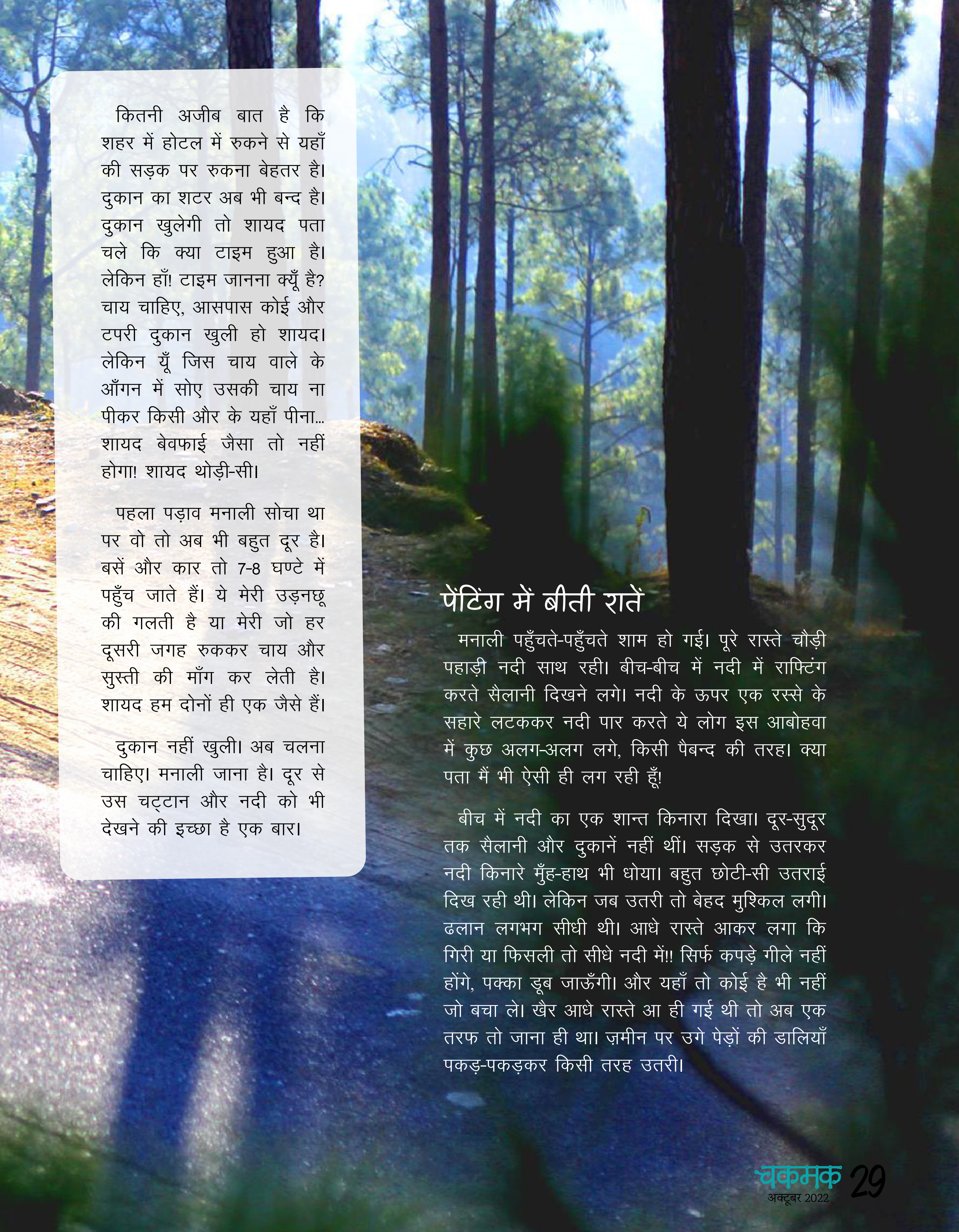

कितनी अजीब बात है कि शहर में होटल में रुकने से यहाँ की सड़क पर रुकना बेहतर है। दुकान का शटर अब भी बन्द है। दुकान खुलेगी तो शायद पता चले कि क्या टाइम हुआ है। लेकिन हाँ! टाइम जानना क्यूँ है? चाय चाहिए, आसपास कोई और टपरी दुकान खुली हो शायद। लेकिन यूँ जिस चाय वाले के आँगन में सोए उसकी चाय ना पीकर किसी और के यहाँ पीना... शायद बेवफाई जैसा तो नहीं होगा! शायद थोड़ी-सी।

पहला पड़ाव मनाली सोचा था पर वो तो अब भी बहुत दूर है। बसें और कार तो 7-8 घण्टे में पहुँच जाते हैं। ये मेरी उड़नछू की गलती है या मेरी जो हर दूसरी जगह रुककर चाय और सुस्ती की माँग कर लेती है। शायद हम दोनों ही एक जैसे हैं।

दुकान नहीं खुली। अब चलना चाहिए। मनाली जाना है। दूर से उस चट्टान और नदी को भी देखने की इच्छा है एक बार।

पेंटिंग में बीती रातें

मनाली पहुँचते-पहुँचते शाम हो गई। पूरे रास्ते चौड़ी पहाड़ी नदी साथ रही। बीच-बीच में नदी में राफ्टिंग करते सैलानी दिखने लगे। नदी के ऊपर एक रस्से के सहारे लटककर नदी पार करते ये लोग इस आबोहवा में कुछ अलग-अलग लगे, किसी पैबन्द की तरह। क्या पता मैं भी ऐसी ही लग रही हूँ!

बीच में नदी का एक शान्त किनारा दिखा। दूर-सुदूर तक सैलानी और दुकानें नहीं थीं। सड़क से उतरकर नदी किनारे मुँह-हाथ भी धोया। बहुत छोटी-सी उतराई दिख रही थी। लेकिन जब उतरी तो बेहद मुश्किल लगी। ढलान लगभग सीधी थी। आधे रास्ते आकर लगा कि गिरी या फिसली तो सीधे नदी में!! सिर्फ कपड़े गीले नहीं होंगे, पक्का डूब जाऊँगी। और यहाँ तो कोई है भी नहीं जो बचा ले। खैर आधे रास्ते आ ही गई थी तो अब एक तरफ तो जाना ही था। ज़मीन पर उगे पेड़ों की डालियाँ पकड़-पकड़कर किसी तरह उतरी।

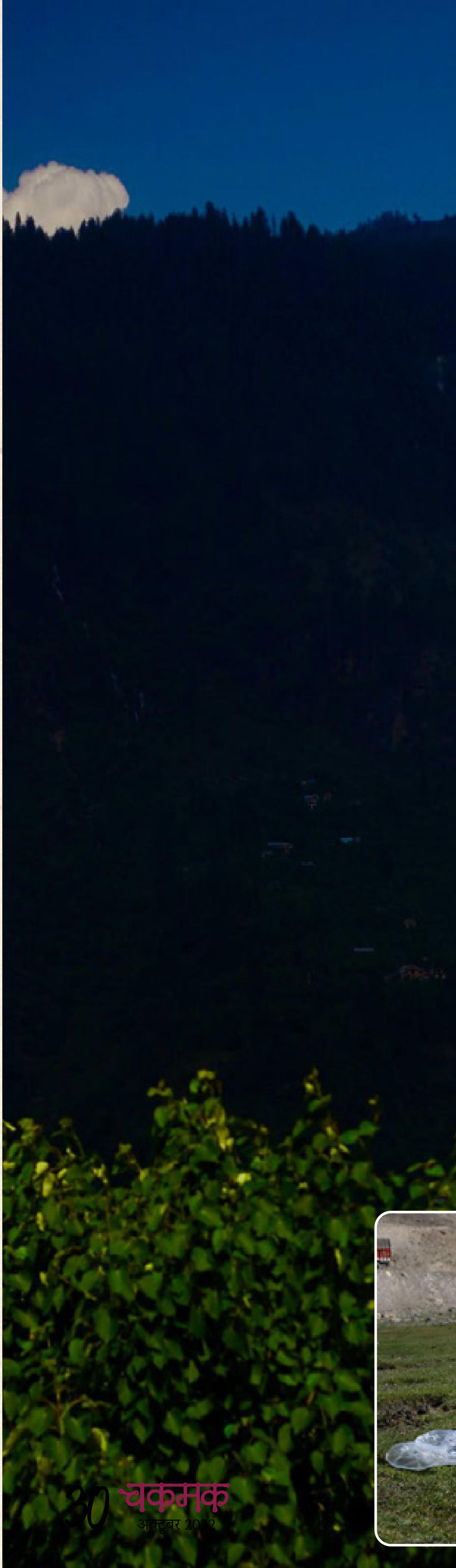

सड़क अब चौड़ी हो गई थी। मनाली में टूरिस्ट की आवाजाही जो इतनी है। एक लम्बा टनल मिला। धूप भरे दिन में टनल में घुसते ऐसा लगता है जैसे कुछ देर के लिए रात उधार ली हो। बाहर निकले तो फिर धूप। एक ठण्डी रात जल्द चुक गई। बीच में कितनी तो जगह रुककर नज़ारा देखा, थकी तो चाय की थड़ियों पर सो गई। चाय की एक खाली थड़ी क्या मिली मैं उसकी लम्बी बैंच पर लमलेट हो गई, हालाँकि वो एक फुट से ज़्यादा चौड़ी नहीं होगी। जब आँख खुली काफी देर हो चुकी थी। सामने की बैंच पर बैठे 4-5 पहाड़ी मजदूर मुझे देख रहे थे। उनकी नज़र में हैरानी नहीं थी। कुछ असुविधाजनक कर देने वाला भी नहीं था। आखिर वो मज़दूर थे – ऐसी थकान से वाकिफ होंगे जिसमें कहीं भी नींद आ जाए। फिर भी मैं अटपटा कर उठी।

फिर वही सड़क। मण्डी से मनाली का रस्ता इतना नहीं था कि शाम हो जाए, लेकिन हो गई! अब तक कहीं ऐसी ठण्ड नहीं लगी थी। अब हल्की-हल्की ठण्ड लगनी शुरू हुई। तभी क्या देखती हूँ कि सड़क के दोनों ओर के पेड़ों पर सेब लटके हुए हैं। राजस्थानी हूँ, पेड़ पर लटके सेब तो कभी देखे ही नहीं थे। वो भी सेब से ऐसे लदे हुए पेड़। मुझसे रहा नहीं गया। बाइक किनारे खड़ी कर मैं उतर गई। इन पेड़ों के भीतर-भीतर रास्ता था। कोई बाड़ नहीं थी! मैं सेब के बाग में थी! चारों तरफ सेब से लदे पेड़। मैं बच्चों की तरह अपनी धुरी पर गोल-गोल घूमी। कुछ सेब तोड़कर खाए। ये वैसे मीठे नहीं थे, पर थे रसीले। मुझे डर लगा क्या कोई माली मुझे डाँटेगा? डाँटेगा तो खा लेंगे डाँट भी! मैं झोली भर सेब लेकर एक सेब के पेड़ के नीचे लेट गई। हरी घास पर लाल सेब किसी पेंटिंग-से दिख रहे थे। ऊपर देखा तो सेब लटके हैं, न्यूटन-जैसा फील आया। लेटे-लेटे बाग देखती रही। लगा ऐसी ही कोई जगह होगी जब ईव ने ऐडम को सेब खिलाया होगा।

मैं ये सब सोच रही थी कि वहाँ एक आदमी दिखा। मन किया भाग जाऊँ लेकिन उठकर बैठ गई। ये सुरेन्द्र जी थे जिनका परिवार इसी बाग में रहता है। वो बस जानना चाहते थी कि मैं कहाँ ठहरी हूँ, वगैरह। क्योंकि कुछ ही देर में रात हो जाएगी और ये हाईवे है। सब हाल जानने पर उन्होंने कहा मैं आज रात उनके यहाँ रुक जाऊँ। एक कमरा है और सोते सब बाहर चारपाई लगाकर हैं। यही हुआ। बाइक सड़क से बाग में उतारी गई। अँधेरा कब हो गया पता ही नहीं चला। पहाड़ में सूरज कितनी तेज़ी-से डूबा, एकदम धप्प-से! बाग ही में चूल्हे पर खाना बनना शुरू हो गया था। कोई सब्ज़ी और रोटी। बच्चे रो रहे थे। अब रात में ये बाग न तो न्यूटन वाला बाग जान पड़ रहा था, न ऐडम और ईव वाला। मच्छरों की फौज का हमला होने लगा था। लेकिन इस सब से निबटकर जब लेटी तो आकाश में ढेर सारे तारे थे।

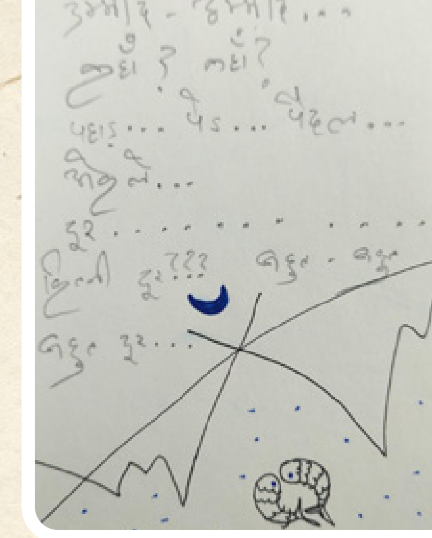

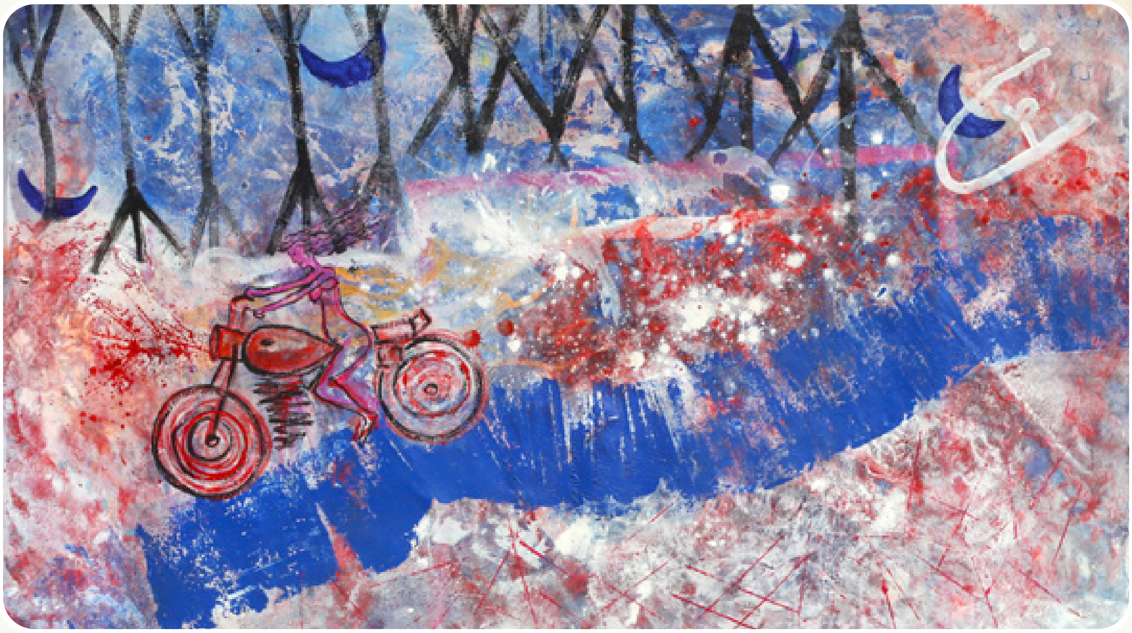

पीछा करता बाज़ार

23 मई, मनाली

मनाली में ज़्यादा रुकने का मन नहीं हुआ! शहर सैलानियों से भरा था। बहुत भीड़ थी। बहुत बड़ा बाज़ार भी था। ये पहाड़ पर बाज़ार है, लेकिन पहाड़ी बाज़ार तो नहीं है। ये मैदानी इलाकों का बाज़ार पहाड़ में आके लग गया ऐसा लग रहा है। हम मैदानों से पहाड़ आए और अपने साथ बाज़ार ले आए।

औरतें मोटे-मोटे फरदार खरगोश लिए खड़ी थीं, जिन्हें सैलानी गोद में लेकर तस्वीरें खिंचवा रहे थे। हालाँकि बाज़ार से थोड़ा हटकर जाने पर पहाड़ी घर मिलने लगे। बोझ व चारा लेकर आती औरतें, बच्चे सँभालती दादियाँ व स्कूल जाते बच्चे नज़र आए। सुना है वशिष्ठ में कोई गर्म पानी का सोता है जहाँ औरतों के नहाने के लिए अलग जगह है। मैं वहाँ चल दी। लेकिन भीड़ देखकर लौट आई। लगा मनाली में अपनी बनेगी नहीं। आगे जाना ही ठीक होगा।

मेरा पन्ना

बारिश बनी रुकावट

नील चड्ढा
आठवीं, डीपीएस इंटरनेशनल स्कूल, गुरुग्राम, हरयाणा

पिछले दो-तीन दिन ठीक चल रहे थे, बारिश हो रही थी लेकिन ज़्यादा तेज़ नहीं। आज पता नहीं क्या हो गया। अभी बारिश का मौसम चल रहा है तो बारिश बहुत हो रही है। आम तौर पर ज़्यादा तेज़ नहीं होती, लेकिन आज के दिन बहुत तेज़ बारिश हुई। हमारे घर का एक गमले वाला पौधा गिरकर टूट गया।

मेरे पापा को पौधे बहुत अच्छे लगते हैं और वो घर के हर पौधे को पानी देते हैं। तो उनको इस बारे में बुरा लगा। इसके इलावा मैं हर दिन अपने पालतू कुत्तों को बाहर घुमाने ले जाता हूँ। लेकिन तेज़ बारिश होने के वजह से आज नहीं ले जा पाया। आम तौर पर शाम को जब मैं उनको घुमाने ले जाता हूँ तो बारिश रुक जाती है, लेकिन इस बार शाम तक तेज़ बारिश चली।

मैं शुक्र करता हूँ कि आने वाले दिनों में यह बारिश रुक जाए ताकि मैं अपनी सामान्य गतिविधियाँ कर सकूँ।

बारिश के एक दिन

इरम
पाँचवीं
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
महराया, ऊधमसिंह नगर
उत्तराखण्ड

जब मैं स्कूल आई तो बारिश हो रही थी। पापा मुझे छाते से स्कूल छोड़ आए थे। जब बच्चे पढ़ रहे थे तो मैं डर गई थी। बारिश और ज़्यादा होने लगी थी। जब मेरी स्कूल की छुट्टी हुई तो मैं घर जाकर बारिश में नहाई। तभी मम्मी चिल्लाईं। तो पापा बोले मम्मी से कि क्यों चिल्ला रही हो। तो मम्मी बोलीं कि बुखार आएगा तो तुम दोगे पैसे। फिर पापा भी मुझे चिल्लाने लगे।

रंग-बिरंगा छाता मेरा

पूनम
तीसरी, राजकीय प्राथमिक विद्यालय
खेड़ा, हल्द्वानी, उत्तराखण्ड

रंग-बिरंगा छाता मेरा
सबके मन को भाता है
बारिश में जब भी निकलूँ
साथ मेरे वो जाता है
पानी में छप-छप करती हूँ
बहुत मज़ा फिर आता है
हवा चले जो तेज़ कभी
छाता उड़-उड़ जाता है

चित्र: विवेक, तीसरी, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, धमतरी, छत्तीसगढ़

दोस्त से झगड़ा

चित्र: दीक्षा देवादुला, एलकेजी, राष्ट्रोत्थान विद्या केन्द्र, बेंगलूरु, कर्नाटका

सीबा
नींव समूह, स्वतंत्र तालीम, रमद्वारी सेंटर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश

मेरा मेरी एक दोस्त से झगड़ा हुआ और फिर वो खिंचता गया। हम छोटी-छोटी बातों पे लड़ते थे, पर मैं उसे बहुत याद करती थी। मगर मैं उससे गुस्सा भी थी। लेकिन उसके घर पे एक दिन बहुत लड़ाई हो गई और मैंने मन बना लिया कि की मैं उससे झगड़ा खत्म करूँगी। और मैंने ऐसा ही किया।

मेरी छोटी-सी माफी ने हमारी दोस्ती बचा ली और अब हम दोस्त हैं।

खुश रह और जी ले अपनी ज़िन्दगी!

दिव्या
बारहवीं
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, स्यांजी बल्ह, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

रक्षाबन्धन भाई-बहनों का त्योहार है। इसमें बहनें अपने भाई को राखी पहनाती हैं। यह राखी बहनें अपने भाई की रक्षा के लिए पहनाती हैं। हमेशा, हर समय भाई को अपनी बहन के साथ खड़ा होना चाहिए। लेकिन सभी के भाई अपनी बहन से लड़ाई भी करते हैं।

मैं और मेरा भाई एक दिन भी लड़ाई न करें तो हमें शान्ति नहीं मिलती। जैसे खाना रोज़ ज़रूरी होता है वैसे हमें रोज़ लड़ना ज़रूरी होता है। न लड़ें तो हमें खाना हज़म नहीं होता। पर जो भी है इस लड़ाई में मज़ा बहुत आता है।

मेरा भाई कभी भी सीधे मुँह बात नहीं करता। पर जब भी मैंने उसकी मदद माँगी वह हमेशा मेरे साथ खड़ा रहता है। रक्षाबन्धन के त्योहार पर जब भी मैं उसे राखी पहनाती हूँ और उससे अपना उपहार माँगती हूँ तो दस रुपए देकर बोलता है, “खुश रह और जी ले अपनी ज़िन्दगी!” उस समय मेरे मुँह से यही शब्द निकलते हैं, “हे भगवान! कैसा भाई मिला है।”

करता तो बहुत प्यार है मुझसे। पर कभी जताता नहीं है। वह जो भी है, जैसा भी है, मेरा प्यारा भाई है।

चित्र: सृष्टि, अज़ीम प्रेमजी स्कूल, मातली, उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड

चित्र: प्रियंका, सातवीं, प्रोत्साहन इंडिया फाउंडेशन, दिल्ली

झरने की मछलियाँ

अमन ठाकुर
पाँचवीं, राजकीय प्राथमिक विद्यालय
बिहारीपुरा, मध्य प्रदेश

एक गाँव में एक झरना बहता था। वहीं झरने के पास एक दादी का घर था। उन दादी का एक लड़का था। झरने में रहने वाली मछलियों से उसने दोस्ती कर ली। वह रोज़ झरने के पास जाकर मछलियों को दाना डालता था।

एक दिन एक मछली मर गई। उस लड़के को बहुत दुख हुआ। कुछ दिन बाद उसने देखा कि झरने में से एक और मछली गायब हो गई थी। उसने गौर किया कि धीरे-धीरे एक-एक करके झरने से मछलियाँ गायब होने लगी हैं।

एक दिन जब वह आम के पेड़ से आम तोड़ रहा था। तभी उसने देखा कि एक मगर झरने की मछलियों को खा रहा था। तब उसे समझ आया कि यही मगर झरने की सारी मछलियाँ खा रहा है।

मेरा पन्ना

चित्र: विशाल कुमार, आठवीं, किलकारी बाल भवन, पटना, बिहार

1\. इस क्रम की अगली संख्या क्या होगी?

6, 11, 21, 36, 56, ...

2\. रिया और शिराज़ बातें कर रहे थे। शिराज़ बोला, “अगर मैं अपने दो बिस्कुट तुझे दे दूँ तो तेरे पास मेरे से दुगुने बिस्कुट हो जाएँगे।” रिया बोली, “अगर तू मुझे एक बिस्कुट और दे दे तो मेरे पास तेरे से तीन गुने बिस्कुट हो जाएँगे।” शुरुआत में दोनों के पास कितने बिस्कुट थे?

3\. अंकल स्मिथ की 4 बेटियाँ हैं। हर बेटी का एक भाई है। तो बताओ अंकल स्मिथ के कुल कितने बच्चे हैं?

4\. 2, 3, 4 और 5 के साथ + व = का चिह्न उपयोग करके एक सही समीकरण बनाओ।

5\. दी गई ग्रिड में कुछ फलों के नाम छिपे हैं। तुमने कितने ढूँढे?

अं	से	ख	र	बू	जा	क	नीं	प
के	गू	जू	आ	पी	मौ	मु	बू	पी
अ	ना	र	डू	ता	र	सं	न	ता
आ	रं	से	अ	ना	ना	स	बी	री
लू	गी	आ	ब	रि	श	ह	तू	त
बु	सी	र	कि	य	री	पा	के	र
खा	ता	स	आं	ल	आ	से	ती	बू
रा	के	भ	प	व	इ	म	ली	ज़
प	श	री	फा	के	ला	हु	ची	कू

6\. तुम छुट्टियाँ मनाने ऊँटी जा रहे हो। घर से निकलते हुए तुम्हें याद आता है कि तुमने मोज़े तो रखे ही नहीं। तुम दौड़कर कमरे में जाते हो। कमरे में एकदम अँधेरा है। तुम्हारी दराज़ में 10 जोड़ी काले, 10 जोड़ी नीले और 11 जोड़ी सफेद मोज़े हैं। लेकिन कोई भी मोज़े जोड़ी में नहीं रखे हैं। तुम्हें दराज़ से कम से कम कितने मोज़े निकालने होंगे ताकि तुम्हारे पास एक रंग के एक जोड़ी मोज़े ज़रूर हों?

माथापच्ची

7. सभी खाली जगहों में एक ही शब्द आएगा। कौन-सा?

लगभग सभी लोग .... देखते हैं। किसी के .... छोटे तो किसी के .... बड़े होते हैं। लेकिन सबके .... पूरे नहीं होते हैं। जो अपने .... को पूरा करने में जी-जान लगा देते हैं, बस उन्हीं के .... पूरे होते हैं।

8. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग फूल आना चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सा फूल आएगा?

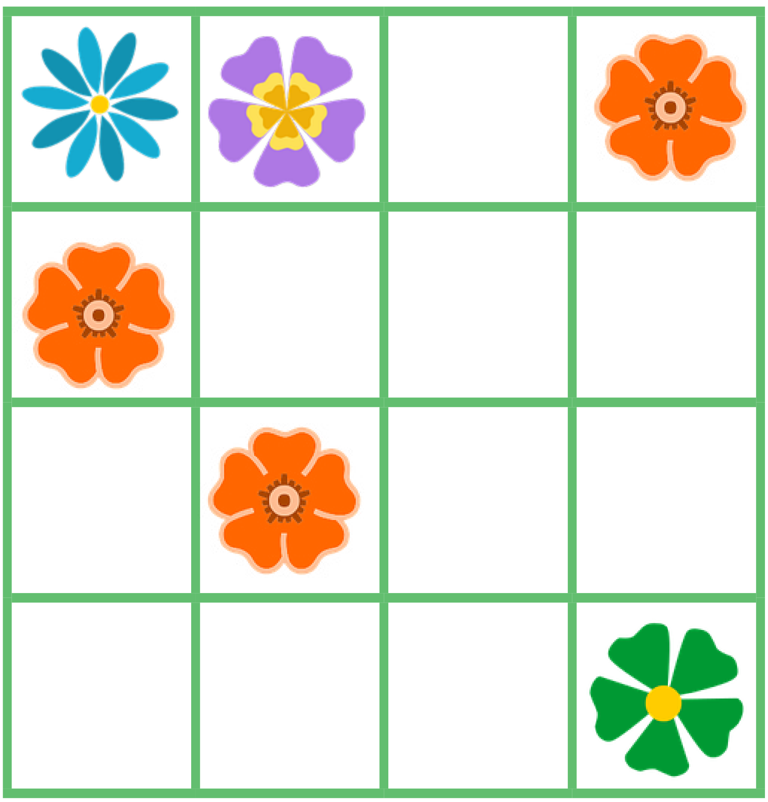

फटाफट बताओ

हाथ में है, पैर में भी। पर जीभ में नहीं है। बोलो क्या?

(उँगली)

किस महीने में लोग सबसे कम सोते हैं?

([illegible])

पानी से बनी ऐसी कौन-सी चीज़ है जो पानी में डली तो पानी-पानी हो गई?

(बर्फ़)

ऐसा कौन-सा फूल है जिसमें ना रंग है, ना खुशबू?

([illegible])

क्या है जो सूँघने से ज़्यादा खाने में अच्छा है?

([illegible])

एक महल में चालीस चोर
मुँह काला, पूँछ सफेद

([illegible])

सात रंग की एक चटाई
बारिश में देती दिखलाई

(इंद्रधनुष)

चित्र पहेली

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो। जवाब तुमको अगले अंक में मिल जाएगा।

सुडोकू 58

	2							
	7	5			2	3	9	1
3	8			9			7	6
		7		6	8	4		
	1			5				
				3	7		8	
	5	3	7	2		1		
			8	4	3	5		7
	4	2			9	6	3	

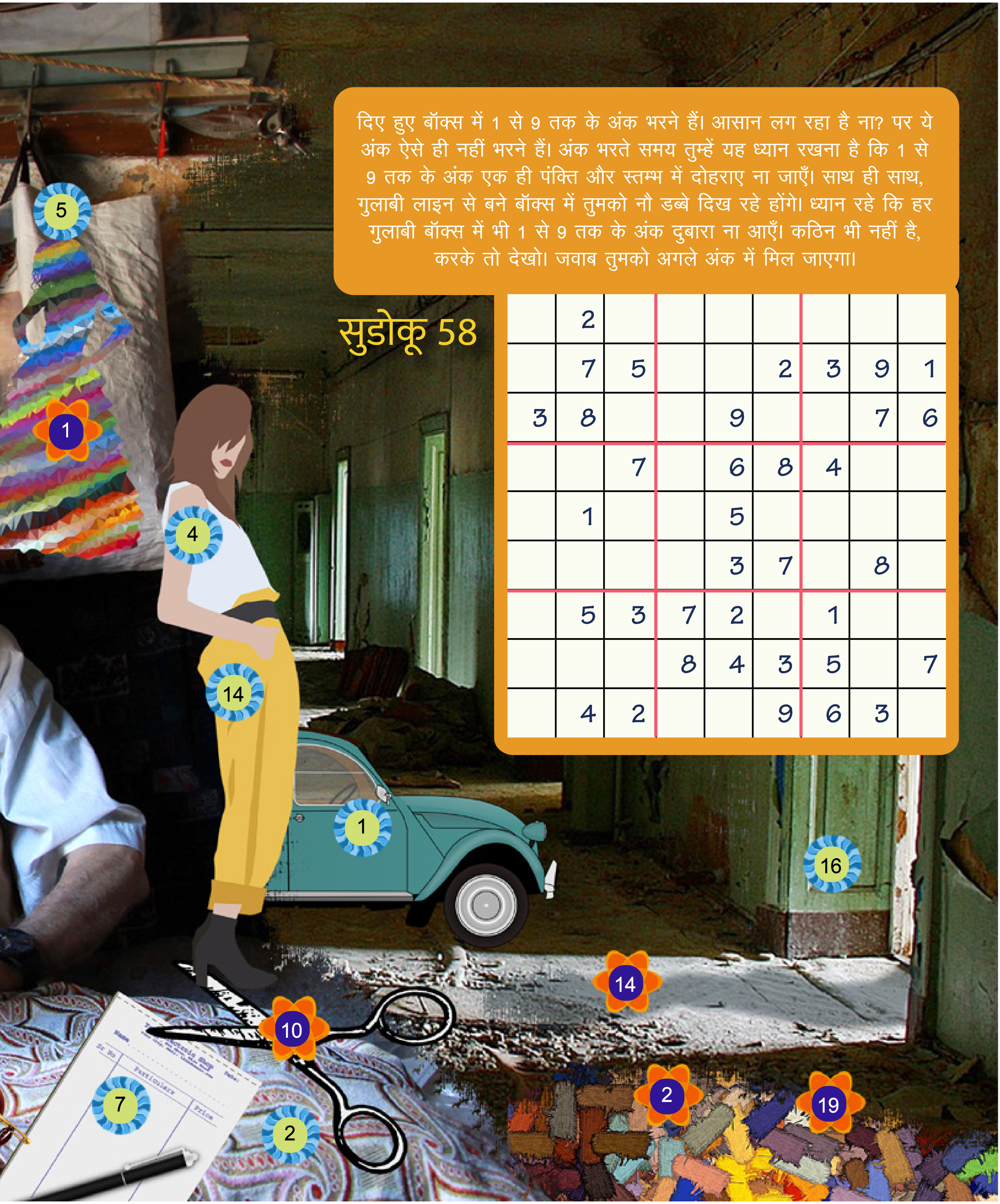

माथापच्ची जवाब

1. ध्यान से देखो:

6 + 5 = 11

11 + 10 = 21

21+ 15 = 36, तो अगली संख्या होगी

36 + 20 = 56

2. दोनों के पास 6-6 बिस्कुट हैं। शिराज़ के दो बिस्कुट देने पर रिया के पास उससे दुगुने बिस्कुट हो जाएँगे। यानी कि इस स्थिति में शिराज़ के पास 4 और रिया के पास 8 बिस्कुट होंगे। ध्यान देना कि रिया ने कहा था कि शिराज़ के उसे एक बिस्कुट और देने पर उसके पास शिराज़ से 3 गुने बिस्कुट होंगे। यानी रिया ने शिराज़ को 3 बिस्कुट देने की बात कही थी। इस स्थिति में रिया के पास 9 और शिराज़ के पास 3 बिस्कुट होंगे।

3. हर बेटी का एक भाई है, इसका मतलब है अंकल स्मिथ का एक बेटा है। तो बच्चों की कुल संख्या 5 हुई।

4. 3 + 4 = 2 + 5

5.

अं	से	ख	र	बू	जा	क	नीं	प
के	गू	न	आ	पी	माँ	मु	बू	पी
अ	ना	र	डू	ता	र	स	न	ता
आ	रं	से	अ	ना	ना	स	बी	री
लू	गी	आ	ब	रि	श	ह	तू	त
बु	सी	र	कि	य	री	पा	के	र
खा	ता	स	आं	ल	आ	से	ती	बू
रा	के	भ	प	व	इ	म	ली	ज़
प	श	री	फा	के	ला	हु	ची	कू

6. चूँकि 3 ही रंग के मोज़े हैं तो अगर तुम 4 मोज़े निकालोगे तो पक्के तौर पर तुम्हें एक जोड़ी मोज़े मिल जाएँगे।

7. सपने

8.

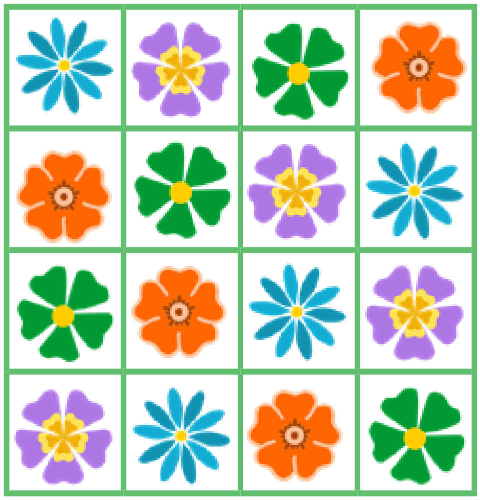

सितम्बर की चित्रपहेली का जवाब

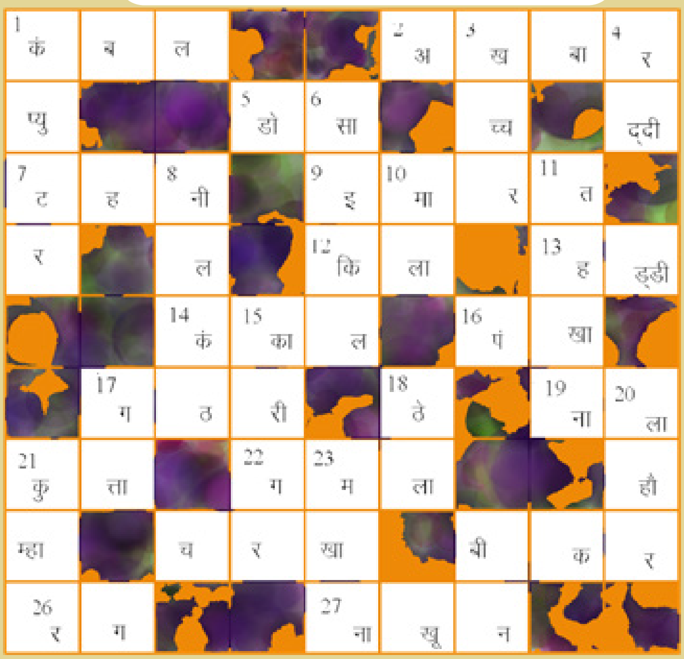

सुडोकू-57 का जवाब

2	7	1	8	6	3	5	4	9
4	8	6	5	9	2	7	3	1
9	3	5	4	7	1	2	6	8
3	9	4	6	8	7	1	2	5
1	5	2	3	4	9	8	7	6
7	6	8	1	2	5	3	9	4
6	1	7	9	3	8	4	5	2
8	4	3	2	5	6	9	1	7
5	2	9	7	1	4	6	8	3

तुम भी जानो

देश के लगभग 80 प्रतिशत सेब कश्मीर से आते हैं। इनकी फसल अगस्त-सितम्बर में होती है। पिछले कुछ सालों से विविध कारणों से कश्मीर के सेब उगाने वाले किसान परेशान हैं। इस साल मौसम ने दगा दिया – कुछ जगहों में मार्च में ही तापमान बहुत ज़्यादा बढ़ गया। और कहीं-कहीं तो बसन्त में भी बर्फ गिरी है। इस कारण कच्चे सेब पेड़ से गिरने लगे और फलों में कई बीमारियाँ भी फैलने लगीं। कहते हैं कि मौसम में यह तब्दीली जलवायु परिवर्तन के कारण हुई है।

27 लोगों को चीन ने दिया दण्ड

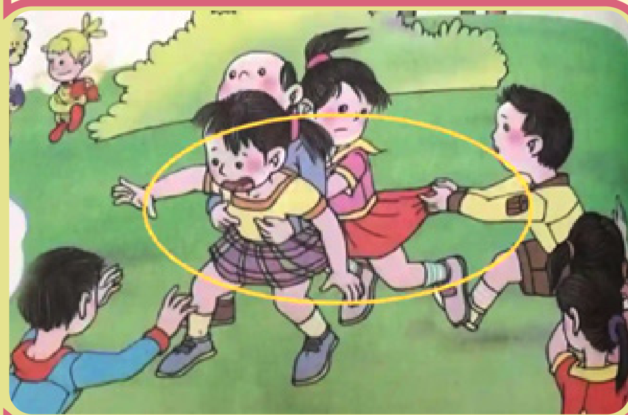

प्राइमरी स्कूल की गणित की किताबों को लेकर चीन में पिछले दिनों कुछ खलबली मची। मई में एक टीचर ने तकरीबन 10 साल पुरानी इन किताबों के कुछ चित्रों के फोटो छापे। सोशल मीडिया पर लोगों ने इनका काफी मज़ाक उड़ाया। चीन सरकार ने इस मुद्दे को लेकर एक महीने तक तहकीकात की। उनको लगा कि किताब के चित्र सुन्दर नहीं थे और चीन के बच्चों को सही तरीके से दर्शा नहीं रहे थे। किसी चित्र में एक लड़का खेल-खेल में एक लड़की की फ्रॉक पकड़ रहा है, तो किसी और चित्र में एक बच्चे की टाँग पर टैटू दिख रहा है। कुछ चित्रों में लोगों के चेहरे टेढ़े-मेढे हैं, तो कुछ में उनके कपड़े ऊटपटाँग हैं। और इस तरह किताब बनने में शामिल 27 लोगों को दण्ड दिया गया।

नानाजी ने नाती के लिए बनाई पॉपअप किताब

कोलकत्ता के रहवासी एक नानाजी की इच्छा थी कि अमेरिका में रहनेवाली उनकी छह वर्षीय नाती बांग्ला साहित्य पढ़े। बचपन की अपनी पसन्दीदा कविताएँ-कहानियाँ वे अपनी नाती को भी पढ़वाना चाहते थे। इसके लिए अपने नाती को प्रेरित करने के लिए उन्होंने खास पॉप-अप किताबें बनाईं। ये ऐसी किताबें हैं जिनमें कुछ किरदार या कुछ अन्य चित्र 3D होते हैं। पन्ना पलटने पर मुड़े हुए ये चित्र अचानक से नज़र आने लगते हैं। प्रोदीप सेनगुप्ता ने ये कला इन्टरनेट के ज़रिए सीखी। उनकी नाती मायरा को इन किताबों को पढ़ने में बहुत मज़ा आता है।

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

ऐवोसेट की चोंच ऊपर की तरफ मुड़ी रहती है और आइबिस की नीचे की तरफ। तो इसी पर पेश है एक चुटकुला...

पक्षी चुटकुला

एक ऐवोसेट और आइबिस कभी दोस्त क्यों नहीं बन सकते

रोहन चक्रवर्ती

अनुवाद: विनता विश्वनाथन

प्रकाशक एवं मुद्रक राजेश खिंदरी द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जाटखेड़ी, फॉर्च्यून कस्तूरी के पास, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026
से प्रकाशित एवं आर के सिक्युप्रिन्ट प्रा लि प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इण्डस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन